THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANATAN BISI): I will put the Resolution to vote.

The question is:

That this House disapproves the total inaction of the Government in tackling the very sharp rise in the prices of essential commodities like cereals, vegetables, edible oils, etc., and urges upon the Government to immediately intervene to roll back the prices of essential commodities and strengthen the public distribution system to protect particularly the economically vulnerable sections of the society.

The motion was negatived

SPECIAL MENTIONS

Demand for Setting up of National Sahitya Academy for Children

श्रीमती वीणा??? (**मध्य प्रदेश**): उपसभाध्यक्ष जी, मेरी एक बहुत बड़ी मांग थी, जो मैंने 3 जनवरी, 1991 को अपने एक सकल्प के द्वारा की थी कि "बच्चों को पाठ्य पुस्तकों के अलावा कुछ अच्छा साहित्य पढ़ने को मिले, जिससे कि उनका ज्ञानवर्धक हो, अच्छे साहित्य की किताबें छपें और उनका हर भारतीय भाषा में अनुवाद हो, पुस्तक मेले लगें जिससे कि बच्चों के लिए जो साहित्य छपे वह देशभर में पहूंच सके और उनके सेखकों को पुरस्कृत किया जा सके और कुछ उनके लेखकों को अनुदान भी दिया जा सके जिससे कि बच्चों के भविष्य निर्माण, मानसिक विकास, योम्पता व प्रतिभाओं का विकास हम कर सकें और इसमें सरकार मदद करे।" वैसे देखा गया है कि भावी नागरिकों को जो ज्ञान की भूख होती है, उसको पूरा करने के लिए सरकार ने उन्हें दूरदर्शन या सस्ते मनोरंजन, इलेक्ट्रानिक मीडिया पर या सस्ते साहित्य पर छोड़ दिया है जिससे बच्चों में हिसक प्रवृत्ति पनप रही है, बच्चे अपनी आयु से पहले ही एडल्ट हो रहे हैं र इसका प्रभाव समाज पर और उनका मानसिकता पर पड़ता है।

अतः मैं आज अपने इस विशेष उल्लेख के जरिए यही मांग करती हूं कि केन्द्र में राष्ट्रीय बाल साहित्य अकादमी की स्थापना हो ताकि इससे देशभर में बच्चों के ज्ञान की भूख को समाप्त किया जा सके। वैसे समय-समय पर इस मांग को, जो बाल साहित्य लिखने वाले लेखकों ने उठाया है और उन्होंने अपने फेडरेशन के द्वारा और सम्मेलनों में प्रस्ताव पास करके सरकार के पास करीब दस साल पहले भेजा था, शिक्षा मंत्रालय को भी भेजा गया है लेकिन इस पर कोई कार्रवाई नहीं हुई कि देश में एक राष्ट्रीय बाल साहित्य अकादमी की स्थापना हो, एक ऐसा मंच बनाया जाए जहां कि बच्चों की किताबें ढंग से छप सकें और देशभर में वितरित हो सकें।

वैसे मैं एक-एक लाइन में बताना चाहती हूं कि बच्चों की पुस्तकें या साहित्य छापने के लिए सरकारी प्रावधान क्या हैं? सिर्फ हमारे पास एक सरकारी केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय हैं, जो कि बड़ों की पुस्तकें छापता है और बच्चों का साहित्य अभई उनसे अपेक्षित है, अभी तक उन्होंने इसमें कोई योगदान नहीं दिया है। एक एन.सी.ई.आर.टी. है सरकार का चलाया हुआ, जो सिर्फ पाठ्य पुस्तकें छापने तक ही समिति रह गया है। इन्होंने सात वर्ष पहले एक अच्छी परम्परा शुरू की थी कि बाल साहित्य की एक सूची बनाई जाए। यह सूची एक बार बनाई गई, उसके बाद यह परम्परा खत्म हो गई। इन्होंने सहित्यकारों को पुरस्कृत करने की भी एक योजना बनाई थी, वह भी अनियमित है। एक चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट है, जो कि भारतीय भाषाओं में बच्चों की कहानियों का अनुवाद कराता है, उनके पास नेटवर्किंग निस्टम की कमी है और एजेन्टस तक नहीं हैं एक हमारे पास बाल भवन है, वह भी अभी तक शायद कोई अपेक्षित परिणाम नहीं ला पाया है। मैं और यह कहूंगी कि हमारे पास एक प्रकाशन विभाग है, जो कि साहित्य छापने का काम करता है। उन्होंने एक पत्रिका निकाली है-बाल भारती और सिर्फ एक ही पुस्तक अंग्रेजी में छपवाई है-चिल्डन्स लिट्रेचर इन इडियन लेंग्वेज, उसमें भी बहुत सारी अशुद्धियां हैं और प्रामक जानकारियां हैं लेकिन बच्चों की कोई और पत्रिका उन्होंने नहीं निकाली है। उनके द्वारा भी बच्चों का सहित्य हाशिए पर है। सचित्र बाल साहित्य ज्यादा से ज्यादा बच्चों के लिए छपे, इसकी देशभर में कमी है। एक नेशनल बुक ट्रस्ट है, उसने एक योजना वनाई है-नेहरू बाल पुस्तकालय योजना, जिसके अंतर्गत वे एक पुस्तक मूल अंग्रेजी में लिखवाते हैं और फिर उसका अनुवाद कराने हैं और एक मेला लगवाते हैं। ऐसे कुछ साहित्यिक अकादमियां, जो कि कुछ स्टेट्स के हैं, आंध्र प्रदेश, केरल और पंजाब में इस तरह की राज्य स्तर पर अकादमियां स्थापित हुई हैं।

महोदय, मैं यही निवेदन करूंगी कि राज्य स्तर पर एक बाल सात्यि अकादमी बने, पहले तो केन्द्र में बने, उसके बाद राज्यों में बने और राजधानी में बच्चों की पुस्तकों के मेले लगें और हर राज्य में मेले लगें। महोदय, मैं यह भी कहना चाहती हूं कि वीडियो आजकल एक बहुत ही अच्छा इलेक्ट्रानिक मीडिया बन गया है जो ज्ञानवर्धक भी करता है। इसलिए स्कूलों में एजुकेशनल वीडियो लाइब्रेरीज बनाई जाएं और बच्चों के लिए राष्ट्रीय स्तर का एक बाल समाचारपत्र निकाला जाए। आपने मुझे इस विशेष उल्लेख माध्यम से अपनी बात का अवसर दिया इसके लिए मैं आपकी आभारी हूं।

श्रीमती सरोज दुबे (बिहार): माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, इस विशेष उल्लेख के जरिए मैं आपका ध्यान बाल साहित्य आकदमी की स्थापना जैसे महत्वपूर्ण विषय की ओर आकर्षित करना चाहती हूं। महोदय मैं राष्ट्रीय बाल भवन की अध्यक्ष हूं, इसलिए मुझे मालूम है कि बाल साहित्य, बालोपयोगी साहित्य बच्चों के लिए कितना आवश्यक है आजादी के 50 साल के बाद भी हमारे यहां बाल साहित्य का कोई स्वरूप निर्मित नहीं हो पाया है और इस बारे में कोई एक निश्चित विचाराधारा अभी तक स्थापित नहीं हो पाई है। यही कारण है कि देश के भावी कर्णधार और राष्ट्र के बचपन को अपनी ज्ञान पिपासा को संतुष्ट करने के लिए, अपनी मानसिक तुष्टि के लिए और अपने मनोरंजन के लिए विदेशी साहित्य का सहारा लेना पड़ता है। जब बच्चे कान्वेंट स्कूलों में पढ़ेंगे और विदेशी साहित्य से ज्ञान-अर्जन करेंगे तो वे एक अच्छे आई.ए.एस. और पी.सी.एस. अफसर तो बन सकते हैं लेकिन एक सच्चे भारतीय और सच्चे नागरिक नहीं बन सकते हैं। इसलिए मेरी यह मांग है कि एक बाल साहित्य अकादमी की अविलम्ब स्थापना हो।

महोदय, हमारा देश स्वाधीनता की स्वर्ण-जयंती मना रहा है और हमारे देश की आजादी का जो इतिहास है, उसे शहीदों ने अपने खून से लिखा है लेकिन इस स्वर्णिम इतिहास के बारे में बच्चों के लिए अभी तक कोई ऐसा साहित्य तैयार नहीं हुआ है कि मनोरंजन ढंग से, प्रभावशाली ढंग से ऐसा मिल जाए कि देशभक्ति की भावना उनके अणु-अणु में, उनके व्यक्तित्व में समाहित हो जाए। ऐसा साहित्य अभी तक तैयार नहीं हुआ है। महोदय, संगती अकादमी, नृत्य अकादीमी, खेल अकादमी, ने जाने कितनी अकादमियां बनी हैं लेकिन जो देश का कर्णधार है, जिसे आने वाले कर में इस देश का नेतुत्व करना है, उस बचपन को संवारने के लिए, उसके व्क्तित्व को तराशने के लिए कोई ऐसा बालोपयोगी साहित्य बनाने के लिए कोई संस्था नहीं बनाई गई, जो इसको एक दिशा दे, बराबर इस पर मनन करते हुए इसको आगे बढ़ाए।

महोदय, मैं थोड़ा सा और बोलना चाहती हूं। महोदय, पश्चिमी समाज की तरह आज हमारे समाज की वर्तमान स्थिति में एकल परिवार बन रहे हैं। पहले समय में सांस्कृतिक विरासत के रूप में सत्य की असत्य पर विजय, बेईमानी और ईमानदारी के बीच का संघर्ष, ये सारी बातें हमें नानी की गोद से, दादी की गोद से कथाओं के माध्यम से मिलती थीं। हमारे बच्चों की जो मौसियां होती थीं, वे अंगुली पकड़कर उन्हें खिलाती थीं और साथ-साथ अनुशासन और अन्य चीजों की शिक्षा देती थीं। लेकिन आज हमारा बच्चा अकेला होता जा रहा है। स्कूल से जब वह लौटता है तो उसके माता-पिता नौकरी पर गए होते हैं क्यों उन्हें भी तमाम चीजों से जुझना है। बच्चा अंग्रेजी स्कूल में पढ़ता है। जब वह स्कूल से घर लौटता है तो उसके सामने एक सहारा होता है टी.वी.। आप जानते हैं कि आजकल टेलीविजन में क्या परोसा जाता है – हिंसा, समाज के टूटते हुए नैतिक स्तर और टूटती हुई मान्यताएं, हत्या, कत्ल जैसी चीजें और आजकल तो हमारे दूरदर्शन और अन्य चैनल्स के माध्यम से न जाने कौन-कौन सी चीजें बच्चों के सामने परोसी जाती हैं। जब वह बच्चा किसी चीज से परेशान होकर अपनी उस आया से, जो खुद गरीबी से परेशान है, जिसका बच्चा अकेला घर में भूख से रो रहा है, उसके पास अपनी जिज्ञासा शांत करने पहुंचता है तो उसके चिड़चिड़े स्वभाव का असर बच्चे के व्यक्तित्व पर पड़ता है। महोदया, अगर हमारे मूल्क के बच्चों के व्यक्तित्त का निर्माण नहीं होगा, बच्चों के कोमल मस्तिष्क पर अच्छे साहित्य का प्रभाव नहीं पड़ेगा तो हमारे बच्चों के नैतिक मूल्य अच्छे नहीं हो सकेंगे। इसलिए बच्चों की ज्ञान पिपाशा को संतुष्ट करने के लिए एक विस्तृत विविषता लिए हुए साहित्य होना चाहिए और वह साहित्य शुष्क नहीं होना चाहिए, बदलते हुए समय के साथ, उसमें बदलते हुए रीति रिवाज के साथ बदलती हुई दुनिया के साथ सारी नई पुरानी चीजें होनी चाहिए और यह तभी होगा जब एक बाल साहित्य एकादमी की स्थापना होगी और बाल साहित्य एकादमी केवल केन्द्र में न होकर राज्य स्तर पर होनी चाहिए, जिला स्तर पर भी होना चाहिए, और बाल साहित्य रोचक हो और बाल साहित्य बच्चों को आकर्षित कर सके

इसके लिए प्रकाशक, चित्रका, इलस्ट्रेटर और लेखकों के समय-समय पर सम्मलन होने चाहिए जैसा कि हम लोग बाल भवन में करते हैं लेकिन साधन के अभाव में हम लोग इसको पूरा रूप नहीं दे पाते हैं। अतः इस तरह के सम्मलन होने चाहिए। बाल साहित्य को जो उपेक्षित कर दिया है उसको प्रोत्साहित करने के लिए उनके लेखकों के सम्मेलन और उनकी कृतियों की पुरस्कृत किया जाना चाहिए। गांव में जो प्राईमरी स्कूल है, ब्लौक में जो लाईब्रेरी है उसमें अच्छे बाल साहित्य वहां पर रखे जाएं ताकि बाल साहित्य के माध्यम से उनका चरित्र बन सके, चरित्र बन सके, चरित्र का गठन हो सके। साहित्य समाज का दर्पण है, साहित्य हमारे अकेलेपन का साथी है, साहित्य हमारा पथ-प्रदर्शक है, साहित्य हमारा हाथ पकड़कर आगे चलना सिखाता है। तो एक ऐसे साहित्य का निर्माण हो पाएगा जो बच्चों की कुशाग्र बुद्धि की आगे ले जाएगा ताकि वह जीवन की राह पर सफलतापूर्वक आगे बढ़ें और देश के अच्छे नागरिक बनकर वे देश की सेवा कर सकें। इन शब्दों के साथ मैं बाल साहित्य एकादमी की स्थापना की मांग बड़े पुरजोर शब्दों में करने के साथ-साथ माननीय सदस्या से अपनी मांग को जोड़ते हुए इस उपेक्षित और चिर-प्रतिक्षित मांग को पूरा करने की मांग करती हूं। धन्यवाद।

Construction of Darbhanga-Farvisgaiij Road by Government of India

श्री रामदेव भंडारी (**बिहार**): धन्यवाद उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं इस विशेष उल्लेख के माध्यम से एक बार पुनः उत्तरी बिहार में निर्माण के लिए प्रतिक्षित एक महत्वपूर्ण सड़की की ओर सरकार का ध्यान दिलाना चाहता हूं। दरभंगा से फारबिसगंज सड़क मार्ग जिसकी दूरी लगभग दो सौ किलोमीटर है, इसको मिसिंग लिंक कहते हैं। केन्द्रीय सरकार ने दरभंगा तक सड़क बनाई है और फिर उस तरफ फारबिसगंज से आगे सड़क बनाई है। इस मिसिंग लिंक को बनाने के लिए हमने कई बार सदन के माध्यम से भी और सरकार के माध्यम से भी प्रयास किया है। इस मिसिंग लिंक को बना देने से उत्तरी बिहार के लगभग 7-8 जिले हैं जो इससे जुड़ जाएंगे,

साथ ही उत्तरी बिहा का आर्थिक विकास, सामाजिक परिवर्तन, जो रुका हुआ है, इससे निरन्तर उसका विकास होगा। महोदय, पिछली बार जब यूनाइटेड फ्रंट की सरकार थी तो सामूहिक रूप से उत्तरी बिहार के लगभग 8-10 सांसदों ने लगातार देवगोड़ा जी से मिलकर, गुजराल साहब से मिलकर तथा वाटर रिसोर्सेज मिनिस्टर, सरफेस ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर उन सभी लोगों से मिलकर सड़क निर्माण के लिए जबर्दस्त प्रयास किया था और इसका नतीजा यह निकलता कि यह काम काफी आगे बढ़ गया और ऐसा लगा कि सड़का निर्माण कार्य शीघ्र आंरभ हो जाएगा इसका शिलान्यास भी हो जाएगा। मगर वह सरकार चली गई, दूसरी सरकार आई है। अब इस दिशा में कोई प्रगति नहीं हो रही है। ऐसा है कि इनको आए हुए भी कम दिन हुआ है ऐसा वह कह सकते हैं। मगर उस सड़क का जो महत्व है उस महत्व को देखते हुए मैं आशा करता हूं कि पूर्वपर्त्ती सरकार द्वारा जो निर्णय लिया गया है, जहां तक प्रगति हुई है, उस प्रगति को यह सरकार और भी आगे बढ़ाएगी। वह जो महत्वपूर्ण सड़क है, दरभंगा-फारबिस गंज लैट्स रोड़, के बन जाने से उत्तरी बिहार का आर्थिक विकास, सामाजिक परिवर्तन अपने आप आगे बढ़ेगा इसलिए उसको निर्माण करने का प्रयास करें, प्रयास ही न करें उसका निर्माण करें। इसी विश्वास के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं। बहुत धन्यवाद।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANATAN BISI): The other Members are not present in the House. I extend my thanks to all the Members for their co-operation. Today we have completed one more Resolution.

The House stands adjourned till 11.00 A.M. on Monday, the 20th July, 1998.

The House then adjourned at twenty-six minutes past six of the clock till eleven of the clock on Monday, the 20th July, 1998.